दादी प्रकाशमणि माउण्ट आबू इंटरनेशनल मैराथन

विश्व बन्धुत्व के लिए ज़मीन से पहाड़ तक 21 किमी दौड़े 3 हज़ार धावक

संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि की स्मृति में हुआ मैराथन

शांतिवन। देश और दुनिया में विश्व बंधुत्व के लक्ष्य को लेकर आयोजित दादी प्रकाशमणि माउण्ट आबू इंटरनेशनल मैराथन में भारत सहित कई देशों के 3 हज़ार से ज़्यादा धावकों ने हिस्सा लिया। खास बात तो यह रही कि यह मैराथन समतल पर नहीं बल्कि ज़मीन से पहाड़ पर चढ़ाई का था। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन से प्रातः 6 बजे हरी झंडी दिखायी गयी। 21.09 किमी की दौड़ लगाते हुए प्रथम विजेता पाली निवासी कल्पेश देवासी ने मात्र 1 घंटे 22 मिनट में ही दूरी पूरी कर ली। वहीं दूसरे विजेता वरुण माउण्ट आबू तथा तीसरे स्थान पर रोहित टोंक विजयी रहे।

मैराथन का शुभारंभ करते हुए आबू रोड रेवदर विधायक मोतीराम कोली ने कहा कि यह मैराथन वर्तमान समय पूरे विश्व में भाईचारा और एकता का संदेश देगा। इससे लोगों में सद्भावना का विकास होगा। आबू रोड पालिका चेयरमैन मगनदान चारण ने कहा कि आज ज़रूरत है कि हम इसे खेल की भावना से ही लें। इस तरह के आयोजनों से निश्चित तौर पर समाज में एकता और समरसता का विकास होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पियन सुनीता गोदारा, देलदर तहसीलदार हुक्मीचंद, सदर धानाधिकारी राजीव लाड, रोटरी क्लब के अजय सिंह, ब्र.कु. देव, ब्र.कु. भानू, ब्र.कु. सत्येन्द्र, ब्र.कु. अमरदीप, ब्र.कु. कोमल, ब्र.कु. मिश्रा व ब्र.कु. सचिन समेत कई लोगों ने हरी झंडी दिखाकर मैराथन को रवानगी दी।

कार्यक्रम में आबू रोड उपखण्ड अधिकारी वीरमाराम ने कहा कि शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए ऐसे आयोजनों की ज़रूरत है ताकि लोगों में जागरुकता आये। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया प्रमुख ब्र.कु. करुणा भाई तथा कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई ने कहा कि दादी प्रकाशमणि का सपना था कि पूरे विश्व में विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास हो। इसके लिए उनके स्मृति दिवस पर यह आयोजन किया जा रहा है और प्रतिवर्ष किया जाता है।

लखनऊ-गोमती नगर(उ.प्र.)। राजभवन में राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राधा दीदी। इस मौके पर ब्र.कु. मंजू दीदी, ब्र.कु. शिक्षा बहन, रवीन्द्र अग्रवाल, डॉ. भूपेन्द्र सिंह व गौरव भाई मौजूद रहे।

देहरादून-उत्तराखंड। राज्यपाल गुरमीत सिंह,सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजू बहन। साथ हैं अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

श्रीनगर गढ़वाल-उत्तराखंड। गैरसैण उत्तराखंड विधानसभा में माननीय मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को रक्षासूत्र बांधते हुए असन्ध सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा दीदी। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ के क्षेत्रीय निदेशक एवं स्पोर्ट्स विंग के सीनियर नेशनल कॉर्डिनेटर ब्र.कु. मेहरचन्द भाई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. सरिता तथा अन्य।

देहरादून-उत्तराखंड। पूर्व मुख्यमंत्री व पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना बहन, ब्र.कु. शैफाली बहन व ब्र.कु. सुशील।

बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। बिलासपुर के होटल रेड डायमण्ड में हैण्ड ग्रुप के द्वारा आयोजित निःशुल्क मल्टीस्पेशलिटी स्वास्थ्य शिविर एवं रक्तदान शिविर के शुभारम्भ कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किये जाने पर ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी ने सम्बोधित किया तथा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल माननीय उप-मुख्यमंत्री अरुण साव सहित सभी मेहमानों को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधा। बेलतरा क्षेत्र के विधायक सुशान्त शुक्ला, भाजपा के जिलाध्यक्ष रामदेव कुमावत, पूर्व महापौर किशोर राय आदि महानुभावों सहित 21 अन्य सामाजिक संगठनों से जुड़े लोग इस शिविर में मौजूद रहे। इस मौके पर अतिथियों के द्वारा स्मृति-चिन्ह देकर ब्र.कु. मंजू दीदी को सम्मानित किया गया। ब्र.कु. गायत्री बहन, ब्र.कु. उमा बहन व ब्र.कु. लता बहन भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

वैजयन्ती माला में आने की युक्ति

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि किसी व्यक्ति में सहनशीलता तो होती है लेकिन 60 प्रतिशत होती है। किसी में 80 प्रतिशत होती है। तो जो विजयी रत्न होंगे उनमें भी वो सद्गुण ज़्यादा होंगे।

एक दूसरा रहस्य सभी को मालूम रहे कि ये जो शिवबाबा के चुने हुए 108 रत्न हैं, दोनों को सभी ने समझ लिया 8 और 100 ये आत्मायें इस भारत में खास जहाँ-तहाँ हैं। एक जगह नहीं विदेशों में भी थोड़ी-थोड़ी हैं। इनका क्या इफेक्ट होगा, जब बहुत ज़्यादा विनाशकाल होगा, जब जल भी बहुत तूफान करेगा, पाँचों तत्व भी फुल फोर्स से अटैक करेंगे, धरती भी बहुत तूफान करेगी, अर्थ क्वेक्स होंगे, उसमें आपदायें आयेंगी। अग्नि भी जलाकर नष्ट करने लगेगी। उस टाइम जहाँ ये एक-एक महान आत्मा होगी इनके वायब्रेशन्स से आस-पास के अनेक लोग सहारा अनुभव करेंगे, सुरक्षित हो जायेंगे और देह तो सभी को छोड़ना ही है। सहज देह छोड़ेंगे। तो बहुत सारी आत्मायें इनसे जुड़ी होंगी। ऐसे ही एक-एक अष्ट रत्न से भी, कई-कई विजयी रत्न भी जुड़े रहते हैं। ये सभी आत्मायें सतयुग से लेकर कलियुग अंत तक इस विश्व के ड्रामा में हीरो एक्टर रहती हैं। धर्म के क्षेत्र में, राज्य के क्षेत्र में बाबा ने साफ कर दिया था। तुम्हारी राजाई त्रेतायुग में समाप्त नहीं हो जाती, कि प्रालब्ध पूरी हो गई। ये द्वापर से भी चलती रहती है। देखो द्वापर में इतिहास इस बात को दर्शाता है कि भारत जब बहुत बड़ा था, पाँच भागों में बंटा रहता था। तो पाँचों में से हरेक का कभी मगध का राजा होता था, उसको सम्राट की उपाधि दी जाती थी। अनेकों को महाराजाधिराज की उपाधि दी जाती थी। बड़े-बड़े राज होते थे सबके पास। एक तो करना बहुत मुश्किल होता था क्योंकि घोड़ों पर चलना होता था, रथों पर चलना होता था। इतने लम्बे-चौड़े राज को सम्भालना भी कोई सहज काम नहीं होता। तो राजाई चलती आती है।

सभी आत्मायें सतयुग से लेकर कलियुग अंत तक इस विश्व के ड्रामा में हीरो एक्टर रहती हैं। धर्म के क्षेत्र में, राज्य के क्षेत्र में बाबा ने साफ कर दिया था। तुम्हारी राजाई त्रेतायुग में समाप्त नहीं हो जाती, कि प्रालब्ध पूरी हो गई। ये द्वापर से भी चलती रहती है।

इन 108 रत्नों में पहली 25 आत्मायें बहुत महान होती हैं। बहुत महान चमकते हुए सितारे, उनका इस सृष्टि चक्र में बहुत अधिक महत्व है। वो भी अनेकों के सहारे बन जाते हैं। उनकी उपस्थिति सेवाओं को भी बढ़ा रही है। क्योंकि सेवाओं की वृद्धि प्युरिटी व ज्ञान की गुह्यता के आधार पर, पालना के आधार पर, जिसने जितने अच्छे वायब्रेशन्स अपने यहाँ बनाये हैं ये सब आधारों से सेवा की वृद्धि होती रहती है। मैं तो साक्षी होकर देखता रहता हूँ जहाँ एक भी विजयी रत्न है, जिसको वहाँ के लोग नहीं जानते। वहाँ सेवा तेजी से बढ़ रही है। लेकिन वो अभी गुप्त रूप से हैं। समय आने पर बाबा उन्हें प्रत्यक्ष करेगा, उनके द्वारा साक्षात्कार करायेगा। तो ये बहुत सुन्दर कार्य चल रहा है। हम सभी को पुरूषार्थ करना है कि माया पर ज़रूर विजयी बनें। विजयी रत्न माना माया पर सम्पूर्ण विजयी। काम वासना पर सम्पूर्ण विजयी, क्रोध पर विजयी, लोभ पर, मोह पूरी तरह समाप्त, अहम तेरा-मेरा ये पूरी तरह समाप्त, इन पाँचों विकारों को छोड़ना जिस पर हम आगे चर्चा करते रहेंगे ये सूक्ष्म साधना की बात है। इसमें योग का बल भी बहुत चाहिए, इसमें ज्ञान का बल भी बहुत चाहिए, मनुष्य का मनोबल भी बहुत चाहिए तो इस कार्य में इन सभी चीज़ों में आगे बढ़ते चलें, जिनको भी विजयी रत्न बनना हो। सभी विकारों पर सम्पूर्ण विजय और विजयी रत्नों को कम से कम आठ घंटा डेली योगयुक्त जीवन तो बिताना ही होगा। और ये बैठकर नहीं करना है।

एक दो घंटा आप बैठेंगे बाकी कर्म करते हुए योगयुक्त जीवन बनायेंगे। ज्ञान चिंतन बहुत अच्छा होगा। तेरे-मेरे के लफड़ों में, टकराव में, झंझटों में ये आत्मायें नहीं रहेंगी। ऐसा पुरूषार्थ जो करेंगे वो विजय माला में आ जायेंगे। बाबा स्वयं अपनी शक्तियां देकर उन्हें तैयार कर रहा है। मन में उमंग तो है ही पर ईश्वरीय शक्तियां भी उनके साथ जुड़ी हुई हैं और ये कार्य आगे बढ़ रहा है और जल्द ही ये सब आत्मायें प्रख्यात हो जायेंगी।